कविता ५ वी
(अ) गुरुबानी

प्रश्न– निम्नलिखित पद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए।

पद्यांश क्र. १ (पाठ्यपुस्तक) पृष्ठ क्र. २३-२४
नानक गुरु न चेतनी मनि आपणे सुचेत.....
.....गुरुमुख जिसु हर मनि बसै तिसु मेले गुरु संजोग।

कृति-१ (आकलन)
* गुरु को महत्व न देनेवाले ऐसे होते हैं।
①
②
③
④

② संजाल पूर्ण कीजिए

नाम स्तुति के लिए ये आवश्यक है।

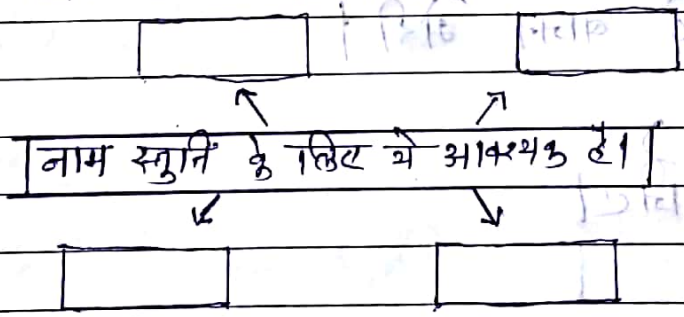

(३) उत्तर लिखिए।
१) मन के लिए यह कहा गया है.......
२) संसार में ऐसे लोग विरले होते हैं.....
३) साधक को अपना ध्यान इसमें लगाना है.....
४) प्रभु के दर्शन के लिए आवश्यक है.....

कृति-२ (शब्दसंपदा)
समानार्थी शब्द लिखिए।
१) तन २) माझि ३) मनि ४) बिसरे –

Scanned by CamScanner

कृति - ३ (अभिव्यक्ति)

* 'गुरु बिन ज्ञान न होइ' उक्ति पर अपने विचार ४० से ५० शब्दों में लिखिए।

उत्तर — ज्ञान की कोई सीमा नहीं है। विभिन्न क्षेत्रों में भिन्न-भिन्न प्रकार के ज्ञान की आवश्यकता होती है। यह ज्ञान हमें किसी न किसी व्यक्ति से मिलता है। जिस व्यक्ति से हमें यह ज्ञान मिलता है, वही हमारे लिए गुरु होता है। बचपन में बच्चे का पालन-पोषण कर उसे बड़ा करके बोलने-चालने और बोली भाषा सिखाने का काम माता करती है। इस समय वह बच्चे की गुरु होती है। बड़े होनेपर बच्चे को विद्यालय में शिक्षकों से ज्ञान प्राप्त होता है। पढ़-लिखकर जीवन में पदार्पण करनेपर हर व्यक्ति को किसी-न-किसी से अपने कामकाज करने का ढंग सीखना पड़ता है। इस तरह के लोग हमारे लिए गुरु समान होते हैं। मनुष्य गुरुओं से ही सीखकर विभिन्न कलाओं में पारंगत होता है। बड़े बड़े विद्वान, विचारक, राजनेता, वैज्ञानिक अपने अपने गुरुओं से ज्ञान प्राप्त करके ही महान हुए हैं।

गुरु की महिमा अपरंपार है। गुरु ही हमें गलत या सही में भेद करना सिखाते हैं। वे अपने मार्ग से भटके हुए लोगों को सही मार्ग दिखाते हैं। यह सच है कि गुरु के बिना ज्ञान नहीं होता।

पद्यांश क्र २ (पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र २५)

तेरी गति मति तू ही जाणे, क्या को आखि बखाणे. ...
.... अनाहद शबद बाजन भेरी।

कृति - १ (आकलन)

(1) कृति पूर्ण कीजिए।

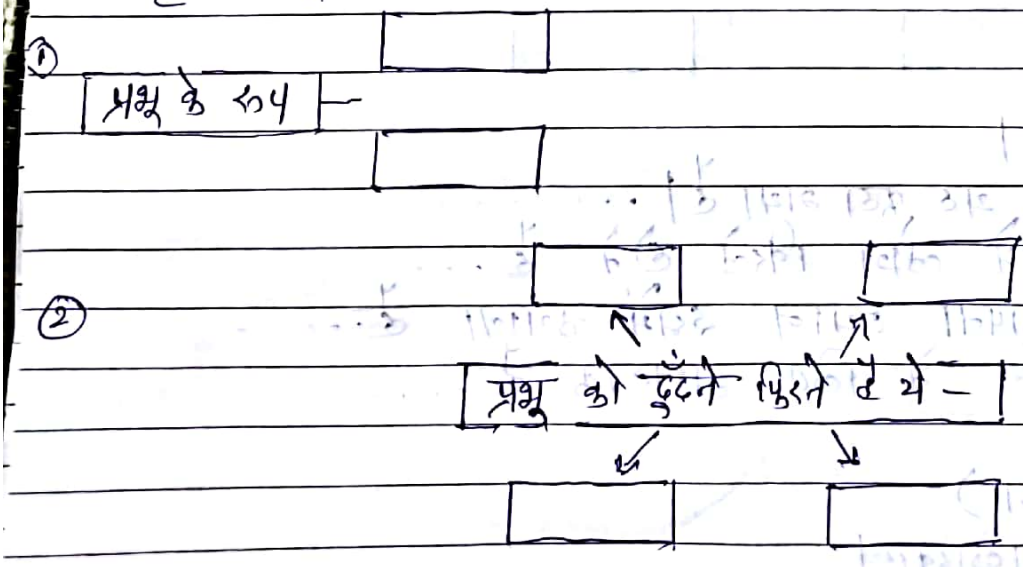

① प्रभु के रूप –

② प्रभु को ढूँढने फिरते हैं ये –

आकाश के दीप — [ ] [ ]

② संजाल पूर्ण कीजिए।

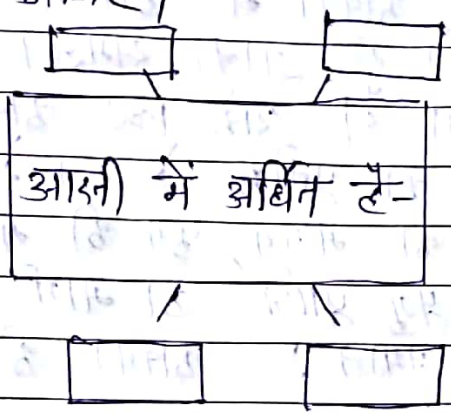

[ ] [ ]

आरती में अर्पित है–

[ ] [ ]

कृति – 2 (शब्दसंपदा)
लिखिए –

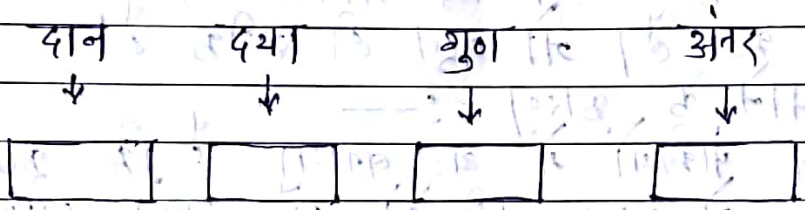

प्रयुक्त युक्त शब्द

दान ↓ [ ] | दया ↓ [ ] | गुण ↓ [ ] | अंतर ↓ [ ]

कृति – 3 (अभिव्यक्ति)
* ईश्वरभक्ति में नाम स्मरण का महत्व होता है। इस विषयपर 40 से 50 शब्दों में अपने विचार लिखिए।

रसास्वादन
* निम्नलिखित मुद्दों के आधारपर दोहे- पदों का रसास्वादन कीजिए।
① रचना का शीर्षक : गुरुवाणी
② रचनाकार : गुरु नानक
③ कविता की केंद्रीय कल्पना : प्रस्तुत दोहे-पदों मे गुरु के महत्व, ईश्वर की महिमा तथा प्रभु का नाम स्मरण करने से ईश्वर प्राप्ति की बात कही गई है।
④ रस- अलंकार

गगन मे थाल, रवि-चंद दीपक बने।
तारका मंडल जनक मोती।
धूप मलयानिल, पवनु चँवरो करे।
सकल वनराइ फुलंत जोति

यहाँ कहा गया है कि गगन की थाल है सूर्य चंद्रमा ही दीपक है, तारका मंडल ही मोती है, मलयानिल ही धूप-गंध है, जंगल की समस्त वनस्पतियाँ फूल है। इसलिए रूपक अलंकार है।

(5) प्रतीक विधान : प्रस्तुत कविता में कवि ने गुरु का चिंतन न करनेवालों तथा अपने आप को ही ज्ञानी समझने वालों को बिना संरक्षक वाले व्यक्ति कहा गया है। इसके लिए कवि ने निर्जन स्थान पर उगी हुई तिल्ली के पौधे का प्रतीक के रूप मे उपयोग किया है।

(6) कल्पना – जीवन में गुरु का महत्व, कर्म की महानता तथा प्रभु के नाम का स्मरण ही प्रभु प्राप्ति का मार्ग है।

(7) पसंद की पंक्तियाँ तथा प्रभाव : कविता की पसंद की पंक्तियाँ इस प्रकार है –

नानक गुरु न चेतनी मनि आपणे सुचेत...
... फुली अहि फुली अहि बपुडे भी तन विच स्वाहा।

इन पंक्तियों मे कवि ने गुरु का महत्व न समझने और अपने को ज्ञानी मानने वालो को मरुस्थल मे पाई जानेवाली तिल्ली की फली मे मिलनेवाली राख कहा है। जो बहुत ही सटीक है।

(8) कविता पसंद आने के कारण :—

गुरु नानक ने इन पंक्तियों मे यह बताया है कि कुछ लोग ऐसे होते है जो गुरु को महत्व नही देते और अपने आप को ही ज्ञानी मान बैठते है। गुरुनानक जी ऐसे लोगो की तुलना उस तिल के पौधे से करते है, जो किसी निर्जन स्थानपर उगता है। ऐसे पौधे में फुल भी उगते है फली भी लगती है पर फली के अंदर दाने नही पडते उसमे गंदगी और राख ही होती है वैसे ही हालत बिना गुरु के मनुष्य की होती है। ऐसे लोगो का मानसिक विकास नही हो पाता।

कविता ५ वी :

(आ) वृंद के दोहे

प्रश्न निम्नलिखित पद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओ के अनुसार कृतियाँ कीजिए।

पद्यांश - १ (पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. २७-२८)
सरसुति के भंडार की, बडी अपूरब बात। ....
.... गागरि कैसे फोरिए, उनयो देखि पयोद ॥

कृति - १ (आकलन)
१) कारण लिखिए -
१) सरस्वती के भंडार को अपूर्व कहा गया है ....
२) व्यापार में दूसरी बार छल-कपट करना असंभव होना है ....

② उत्तर लिखिए।
१) आँखो की तुलना की गई है इससे -
२) काम शुरू करने से पहले इसके बारे में सोचना बहुत जरूरी होना है -
३) दूसरे की आशा के भरोसे यह बंद नही करना चाहिए -
४) पद्यांश मे प्रयुक्त पानी रखने के काम आनेवाला मिट्टी का बरतन -

③ सहसंबंध जोडिए :

१) ऊँचे बैठे ना लहैं, गुन बिन बडपन कोइ।	१) तेते पाँव पसारिए, जेती लांबी सौर ॥
२) अपनी पहुँच बिचारि कै, करतब करिए दौर	२) बैठो देवल सिखर पर वायस गरुड़ न होई ॥

④ पद्यांश मे प्रयुक्त दो कहावते

कृति - २ (शब्दसंपदा)
१) निम्नलिखित शब्दो को शुद्ध रूप में लिखिए।
१) सुरसति २) अपूरब ३) गुन ४) सिखर

Scanned by CamScanner

2) निम्नलिखित शब्दों के लिंग पहचानकर लिखिए -
1) आरसी 2) सौर 3) काठ 4) वायस

3) विरुद्धार्थी शब्द लिखिए
1) बढ़ना 2) कपट 3) गुन 4) आशा

कृति - 3 : (अभिव्यक्ति)

* चादर देखकर पैर फैलाना बुद्धिमानी कहलाती है' इस विषय पर 40 से 50 शब्दों में अपने विचार व्यक्त कीजिए।

उत्तर :- चादर देखकर पैर फैलाने का अर्थ है, जितनी अपनी क्षमता हो उतने में ही काम चलाना। यह अर्थशास्त्र का साधारण नियम है। सामान्य व्यक्तियों से लेकर बड़ी-बड़ी कंपनियाँ भी इस नियम का पालन करती है। जो लोग इस नियम के आधारपर अपना कार्य करते है, उनके अनुसार काम सुचारू रूप से चलते है। जो लोग बिना सोचे-विचारे किसी काम की शुरुआत कर देते है और अपनी क्षमता का ध्यान नही रखते, उनके सामने आगे चलकर आर्थिक संकट उपस्थित हो जाता। इसके कारण काम ठप हो जाता है। इसलिए समझदारी इसी में है कि अपनी क्षमता का अंदाज लगाकर ही कोई कार्य शुरू किया जाए। इसमें कार्य आसानी से पूरा हो जाता है। चादर देखकर पैर फैलाने में ही बुद्धिमानी होती है।

पद्यांश - 2 (पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र 28)

कुछु कहि नीच न छेड़िए, भलो न वाको संग।....
.... होनहार बिरवान के, होत चीकने पात॥

कृति - 1 (आकलन)

1) कारण लिखिए
1) नीचे नीच को छेड़ना नही चाहिए.....
2) उच्च पद पर आसीन का पतन निश्चित है.....

(2) सहसंबंध जोडिए :-
1) कोकिल अंबहि लेत है, 1) होत चीकने पात।
2) होनहार बिरवान के, 2) काग निबौरी लेत।

3) उत्तर लिखिए।
1) सूर्य इस समय तपता है.....

Scanned by CamScanner

2) निबौरियों का आदर करनेवाला......
3) यह कार्य अपने लिए हानिकारक होता है.....
4) चिकने पात इनके होते है...

4) लिखिए —

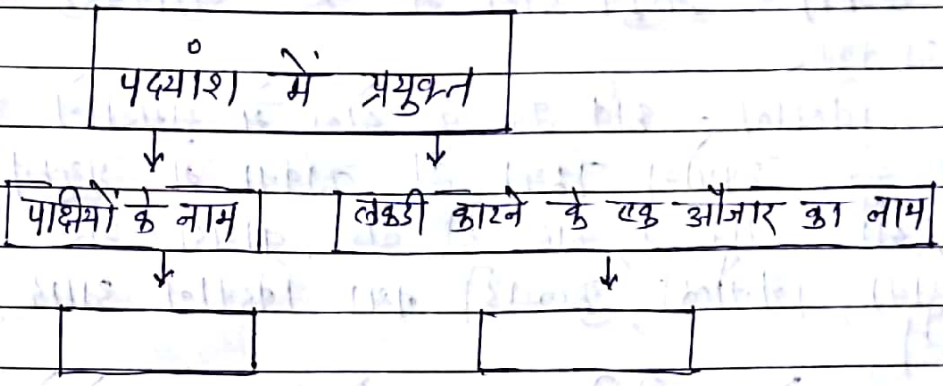

पद्यांश में प्रयुक्त
↓ ↓
पक्षियों के नाम | लकड़ी काटने के एक औजार का नाम
↓ ↓
[ ] [ ]

कृति : 2 (शब्दसंपदा)

1) निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए।
① आदर X 2) अस्त X
3) कपूत X 4) पतन X

2) समानार्थी शब्द लिखिए।

कृति – 3 (अभिव्यक्ति)

* ज्ञान की पूँजी बढानी चाहिए। इस विषयपर 40 से 50 शब्दों में अपने विचार लिखिए।

उत्तर: ज्ञान मनुष्य की अमुल्य पूँजी है। बचपन से मृत्यु तक मनुष्य विभिन्न स्त्रोतों से ज्ञान की प्राप्ति करता रहता है। बचपन में उसे अपने माता-पिता, अपने शिक्षकों, गुरुजनों तथा मिलने-जुलने वालों से ज्ञान की प्राप्ति होती है। ज्ञान का भंडार अपार है। कुछ ज्ञान हमे स्वाभाविक रूप से मिल जाता है, पर कुछ के लिए हमें स्वंय प्रयास करना पडता है। ज्ञान किसी एक की धरोहर नहीं है। ज्ञान हमारे चारो तरफ बिखरा पडा है। उसे देखने की दृष्टि की जरूरत होती है। संतो, महात्माओ तथा मनीषियों के व्याख्यानों, हितोपदेशो, नीतीकथाओ, बोधकथाओ तथा विभिन्न धर्मों के महान ग्रंथो में ज्ञान का भंडार है। हर मनुष्य अपनी क्षमता और आवश्यकता के अनुसार ज्ञान की पूँजी मे वृद्धि करता रहता है। भगवान महावीर, बुद्ध, महात्मा गांधी जैसे महापुरुष अपनी ज्ञान की पूँजी तथा अपने कार्यो के बलपर जनसामान्य के पूज्य बन गए है। इसलिए मनुष्य को सदा अपने ज्ञान की पूँजी बढाते रहना चाहिए।

Scanned by CamScanner

* निम्नलिखित मुद्दो के आधारपर वृंद के दोहे का रसास्वादन कीजिए। ⑧

① रचना का शीर्षक – वृंद के दोहे।

2) रचनाकार : वृंद

3) केंद्रिय कल्पना – प्रस्तुत दोहो मे कई नीतिपरक बातों की सीख

4) रस अलंकार

5) प्रतीक विधान – कवि वृंद के दोहो मे समझाने के लिए कई प्रतीकों का सुंदर उपयोग किया है। कविता मे प्रयुक्त इन प्रतीको में नयना, सौर (चादर), काठ की हाँडी, वायस, गरुड, गागरि, पाथर, कोकिल, अंबा, निबौली, कुल्हाडी तथा बिरवान आदि प्रतीकों का समावेश है।

⑥ कल्पना – अनेक नीती-परक उपयोगी बाते दोहो का विषय

7) पसंद की पंक्तियाँ तथा प्रभाव – कविता की ~~विपुलता~~ पंक्तियाँ इस प्रकार है–

सुरसति के भंडार की बडी अपूरब बात।
ज्यौं खरचै त्यौं-त्यौं बढ़े, बिन खरचे घटि जात।

इन पंक्तियो से ज्ञान के भंडार की विपुलता तथा इसके विशेष गुण की महत्ता की जानकारी होती है।

⑧ कविता पसंद आने के कारण :– संसार में कोई ऐसी वस्तु नही है, जो किसी को देने से कम न होती हो। लेकिन ज्ञान का भंडार निराला है। इस ज्ञान को जितना खर्च किया जाए इतना ही अधिक बढ़ता है। इतना ही नही, यदि इसे दूसरो को न दिया जाए और अपने ही पास जमा करके रहने दिया जाए, तो यह नष्ट हो जाता है।

साहित्यसंबंधी ज्ञान :–

1) वृंद जी की प्रमुख रचनाएँ

उत्तर – वृंद जी की प्रमुख रचनाएँ इस प्रकार है : वृंद सतसई समेत शिखर छंद, भाव पंचाशिका, पवन पचीसी, हितोपदेश, यमक सतसई, तथा सत्यस्वरूप आदि।

2) दोहा छंद की विशेषता – दोहा सम मात्रिक छंद है। इसके चार चरण होते है। दोहे के प्रथम और तृतीय (विषम) चरण मे 13-13 मात्राएँ होती है तथा चतुर्थ (सम) चरणो मे 11-11 मात्राएँ होती है। दोहा के प्रत्येक चरण के अंत मे लघुवर्ण आता है। जैसे- सुरसुति के भंडार की, बडी अपूरब बात।
① 13 मात्रा, 2) 11 मात्रा

Scanned by CamScanner